(पृष्ठ-20 का शेष...)

प्रश्न : आप कहते हो कि परद्रव्य में सुख नहीं है; किन्तु धन में तो प्रत्यक्ष सुख दिखाई देता है ?

उत्तर : हे भाई ! धनादि में सुख कहाँ है ? धन तो जड़ धूल है, उसमें रंचमात्र भी सुख नहीं है। धनादिक के लक्ष से जो भी विकल्प उत्पन्न होते हैं, वे आकुलतारूप हैं, दु:ख के कारण हैं। धनादि के विकल्पों की पूर्ति में जो सुख मानता है, वह वास्तव में अज्ञानी है, मूढ है। अपने अज्ञान के कारण वह धनादि में सुख मानता है; सच्चे सुख की तो उसे खबर ही नहीं है।

इससे विपरीत सम्यग्दृष्टि ज्ञानी जीव परपदार्थों में सुख नहीं मानता। भरत चक्रवर्ती छह खण्ड के धनी थे; किन्तु वे घर में ही वैरागी थे। उन्हें छह खण्ड के वैभव में कुछ भी सुख भासित नहीं होता था। वस्तुत: धनादिक के सम्बन्ध से उत्पन्न हानेवाले विकल्प को भी धर्मी जीव रोग के समान मानता है, उपसर्ग मानता है, अग्नि के समान मानता है।

जैसे-जैसे आत्मा का निजस्वरूप ख्याल में आता है, वैसे-वैसे अन्तर में अतीन्द्रिय आनन्द की वृद्धि होती जाती है। इसी का नाम निर्जरा है। शुद्धता का उत्पन्न होना संवर है और उसी शुद्धता की वृद्धि होना निर्जरा है।

हे भाई ! यह गाथा अत्यन्त मार्मिक है। मक्खन के समान है। करने योग्य कार्य तो एकमात्र आत्मानुभव ही है। लाख भव हो अथवा अनन्त भव हो; किन्तु इस बात को समझे बिना त्रिकाल में कभी भी मुक्ति नहीं है।

निजात्मा को समझकर, पहिचानकर उसमें लीन होना ही एक करनेयोग्य कार्य है। ऐसा कार्य जिन योगियों ने किया है, उन्हें आत्मध्यान में कितनी तत्परता वर्तती है, यह बात यहाँ स्पष्ट कर रहे हैं।

आत्मज्ञानपूर्वक जो योगी निजस्वरूप में स्थिर हुये हैं, उन्हें अपने शरीर का भी लक्ष नहीं रहता। देखो ! गजकुमार मुनिराज के मस्तक पर सिगड़ी जल रही थी; किन्तु उनका ध्यान उस ओर नहीं था।' मैं अनुभव करनेवाला आत्मा और यह मेरे अनुभव की पर्याय' ह्न ऐसा विकल्प भी अनुभव में उत्पन्न नहीं होता। वस्तुत: एकमात्र निर्विकल्प अनुभव ही यथार्थ धर्म है। **(क्रमश:)**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 25 287 अंक : 11

प्रवचनसार कलश पद्यानुवाद

(मनहरण कवित्त)

इस भाँति पर परिणति का उच्छेद कर,
करता-करम आदि भेदों को मिटा दिया।
इस भाँति आतमा का तत्त्व उपलब्ध कर,
कल्पनाजन्य भेदभाव को मिटा दिया।।
ऐसा यह आतमा चिन्मात्र निरमल,
सुखमय शान्तिमय तेज अपना लिया।
आपनी ही महिमामय परकाशमान,
रहेगा अनंतकाल जैसा सुख पा लिया।।८।।

(दोहा)

अरे द्रव्य सामान्य का अबतक किया बखान।
अब तो द्रव्यविशेष का करते हैं व्याख्यान।।०९।।
ज्ञेयतत्त्व के ज्ञान के प्रतिपादक जो शब्द।
उनमें डुबकी लगाकर निज में रहें अशब्द।।१०।।
शुद्ध ब्रह्म को प्राप्त कर जग को कर अब ज्ञेय।
स्वपर प्रकाशक ज्ञान ही एकमात्र श्रद्धेय।।११।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

एक मात्र करने योग्य कार्य

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 42 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

किमिदं कीदृशं कस्य कस्मात्क्वेत्यविशेषयन्।
स्वदेहमपि नाऽवैति योगी योगपरायणः ।।42।।

योग परायण (ध्यान में लीन) योगी यह क्या है ? कैसा है ? किसका है ? क्यों है ? कहाँ है ? इत्यादि भेदरूप विकल्प नहीं करता हुआ अपने शरीर को भी नहीं जानता। (अर्थात् उसको अपने शरीर का भी ख्याल नहीं रहता।)

देखो भाई ! यह आचार्य पूज्यपादस्वामी द्वारा कहा गया हितकारी उपदेश है।

धर्मी जीव को ऐसी पक्की श्रद्धा और रुचि वर्त रही है कि 'निज आत्मा ही आनन्द का घनपिण्ड है।' इसलिये उसे अपनी आत्मा से भिन्न अन्य विषयों अथवा पदार्थों में रंचमात्र भी रुचि नहीं है।

परद्रव्य अथवा पुण्य-पापादि रूप विकल्पों में धर्म अथवा सुख नहीं है। अपने ज्ञानानन्द सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान आत्मा में ही सुख है, उसे पर्याय में प्रगट करना ही जीव का यथार्थ धर्म है।

धर्मी को अन्तर आनन्द की लगनपूर्वक समस्त प्रकार का भेदभाव छूटकर अभेदभाव वर्तता है। वह अभेद भाव कैसा है ? इस बात को यहाँ आचार्यदेव ने स्पष्ट किया है।

अहो ! शरीर से बालक हो, स्त्री हो, पुरुष हो अथवा पशु हो; किन्तु शरीर से भिन्न निज भगवान आत्मा की जिसे लगन लगी हो, एक निजात्मा का ही श्रद्धान-ज्ञान और अनुभव जिसे वर्तता हो ह्न ऐसे ध्यान में परायण ज्ञानी की यहाँ चर्चा है।

भगवान आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द का जिसे एकबार अनुभव हुआ है ह्न ऐसा धर्मी जीव बारंबार आत्मध्यान में ही तल्लीन होता है। उससमय आत्मा क्या है ? कैसा है ? कौन है ? इत्यादि कोई भी विकल्प उसे उत्पन्न नहीं होते।

परद्रव्य अथवा पुण्य-पापभाव संबंधी किसी भी प्रकार के विकल्प तो उसको

है ही नहीं; किन्तु आत्मा के संबंध में भी किसीप्रकार का कोई विकल्प उसे नहीं वर्तता है। वह तो निज स्वरूपस्थिरता में ही निरन्तर मग्न रहता है।

जिसप्रकार किसी पुरुष को पकवान का सेवन करते हुये देखकर मन में उस पकवान संबंधी विकल्प उठते हैं। प्रथम तो उस व्यक्ति से पूछते हैं कि यह कैसा लगता है ? इसका भाव क्या है ? कहाँ मिलता है ? सब पूछकर स्वयं उस जगह जाते हैं और स्वयं पैसा देकर, तोल-माप करके उस पकवान को घर लाते हैं; फिर उसका सेवन करते समय मन में उस पक्वान के भाव अथवा तोल-माप संबंधी कोई प्रश्न उत्पन्न नहीं होता। केवल उसके स्वाद का अनुभव करते हैं।

उसीप्रकार जिज्ञासु जीव ने प्रथमत: आत्मा कैसा है ? कौन है ? उसका स्वामी कौन है ? उसका स्वरूप कैसा है ? इत्यादि समस्त बातों का यथार्थ निर्णय करके यह निश्चित कर लिया कि 'मैं आत्मा हूँ, अनन्त गुणों का पिण्ड हूँ। अनादि सत्स्वरूप मैं स्वयं में ही विद्यमान हूँ।'

एकबार ऐसा पक्का निर्णय होने के बाद धर्मी जीव निजात्मा के अखण्ड आनन्द में ही लीन रहता है। अब, उसे अन्य बातों का विचार भी उत्पन्न नहीं होता।

यहाँ इष्टोपदेश में आचार्य देव कहते हैं कि हे भाई ! निजात्मा की रुचि उत्पन्न होना ही जीव का प्रथम कर्तव्य है, यही प्रधान धर्म है। ऐसा आत्मधर्म तो आठ वर्ष का बालक हो अथवा स्त्री हो अथवा कोई अन्य व्यक्ति हो तो उसे भी प्रगट हो सकता है।

जिसप्रकार मक्खी जैसा छोटा प्राणी जिसे मन नहीं है, कान नहीं है, फिर भी शक्कर के स्वाद में ऐसा तल्लीन हो जाता है कि शक्कर के दाने को छोड़ता ही नहीं है; फिर उसे फिटकरी का स्वाद नहीं रुचता ।

उसीप्रकार धर्मी जीव पाँच इन्द्रिय अर्थात् स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण के विषयों में जहर जैसे स्वाद का अनुभव करता है। पुण्यभाव को भी फिटकरी जैसा तुच्छ जानकर, उसमें लीन नहीं होता। जिसप्रकार शक्कर मिठास का पिण्ड है, उसीप्रकार आत्मा आनन्द का पिण्ड है ह्न ऐसे निजात्मा के स्वाद में धर्मी ऐसा लीन होता है कि उसे अन्य किसीप्रकार का विकल्प ही नहीं उठता। **(शेष पृष्ठ - 4 पर ..)**

आत्मा किसका कर्त्ता-भोक्ता है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 19 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

दव्वत्थिएण जीवा वदिरित्ता पुव्वभणिदपज्जाया।
पज्जयणएण जीवा संजुत्ता होंति दुविहेहिं ।।

द्रव्यार्थिकनय से जीव पूर्वकथित पर्याय से व्यतिरिक्त है; पर्यायार्थिकनय से जीव उस पर्याय से संयुक्त है। इसप्रकार जीव दोनों नयों से संयुक्त है।

पहले तो कारणशुद्धपर्याय और कार्यशुद्धपर्याय वगैरह की चर्चा की थी। अब यहाँ विभाव पर्यायों की ही अपेक्षा है। पूर्व में पन्द्रहवीं गाथा के प्रथम पद में कही गयी विभाव पर्यायें ही यहाँ लेना है; द्वितीय पद में 'कम्मोपाधिविवज्जियपज्जाया' कहा है, वे पर्यायें यहाँ नहीं लेना है।

जो विभाव व्यंजनपर्यायें कही थीं, उन पर्यायों से जीव द्रव्यार्थिकनय से जुदा है। कारणशुद्धपर्याय के अतिरिक्त अन्य सभी पर्यायें पर्यायार्थिकनय का विषय है; किन्तु यहाँ पर्यायार्थिकनय के विषय में मात्र विकारी व्यंजनपर्यायें ही लेना है; पर्यायनय से वे विकारी व्यंजनपर्यायें जीव की हैं और द्रव्यनय से जीव उन विकारीपर्यायों से रहित है।

प्रत्येक जीव को यह दो नय लागू पड़ते हैं। भगवान सर्वज्ञ के मार्ग में वस्तु का निरूपण दो नयों के आधीन है। यहाँ उन दोनों नयों को सिद्ध किया है। उनमें से त्रिकाल का आदर और वर्तमान का ज्ञान ह्न ऐसे समझे तभी दोनों नयों को जाना कहा जाये।

त्रिकाल और वर्तमान दोनों को जानने वाला ज्ञान त्रिकाल की ओर बढ़े बिना नहीं रहता । वर्तमान माने व्यवहार का ज्ञान तो मात्र जानने के लिये ही है; परन्तु त्रिकाली का ज्ञान मात्र जानने के लिये ही नहीं होता; उसकी तरफ झुककर उसका

आदर करे तो ही उसका ज्ञान हो। त्रिकाली के आदर बिना उसका ज्ञान होता ही नहीं; त्रिकाली को जाना तो ज्ञान उसमें झुक ही जाता है, क्योंकि वर्तमान की अपेक्षा त्रिकाली का सामर्थ्य अनन्तगुना है। अत: उसको जानने पर ज्ञान का अनन्तवीर्य स्वभाव की ओर झुकता ही है ह्न इसीप्रकार दो नयों का सफलपना है।

वर्तमान जितने व्यवहार को जानने में उसके आदर की आवश्यकता नहीं; किन्तु त्रिकाली निश्चय को जानने में उसका आदर भी साथ ही आ जाता है। त्रिकाली को जाने और उसका आदर न हो ऐसा बनता ही नहीं। निश्चय और व्यवहार दोनों को जानने वाला ज्ञान निश्चय की तरफ ही ढल जाता है और तभी ज्ञान में दोनों नयों का सफलपना होता है।

निश्चय और व्यवहार दोनों को समान जानें तो समझ लो कि उस ज्ञान ने निश्चय की महिमा जानी ही नहीं, वह ज्ञान ही सच्चा नहीं। ध्रुव का ज्ञान ध्रुव की ओर ढलने पर ही होता है और तभी व्यवहार को समयमात्र का अर्थात् समयपुरता जानता है।

भगवान सर्वज्ञ ने द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक दो नय कहे हैं। एकरूप ध्रुव-स्थायी द्रव्य ही जिसका विषय है, वह द्रव्यार्थिकनय है। ध्रुव द्रव्य के समक्ष देखने वाला ज्ञान द्रव्यार्थिकनय है। जिस ज्ञान का हेतु, प्रयोजन, लक्ष्य, ध्येय द्रव्य ही है, वह द्रव्यार्थिकनय है; जो नय द्रव्य का अर्थी है, द्रव्य का ज्ञान ही जिसका प्रयोजन है, वह द्रव्यार्थिकनय है।

यहाँ द्रव्य कहने से प्रमाण का विषयरूप द्रव्य नहीं समझना। यहाँ द्रव्यार्थिक नय का विषय तो वर्तमान पर्याय को गौण करके त्रिकाली ध्रुवद्रव्य है।

द्रव्यार्थिकनय का विषय द्रव्य और पर्यायार्थिकनय का विषय पर्याय है ह्न इसप्रकार दोनों नय सफल हैं। जहाँ द्रव्यार्थिकनय से द्रव्य को ध्येय किया, वहाँ ज्ञान उस द्रव्य की तरफ झुक गया अर्थात् उस ज्ञान में द्रव्य का ही आदर हुआ। द्रव्यार्थिकनय द्रव्य का ही अर्थी है, उसका प्रयोजन त्रिकालशुद्ध को जानने का ही है।

जो पर्याय को ही देखता है, वह पर्यायार्थिकनय है। जिस ज्ञान ने पर्याय और द्रव्य दोनों को जाना उस ज्ञान का जोर द्रव्य के ऊपर ही जाता है। प्रयोजन तो दोनों नयों का

है; परन्तु एक का प्रयोजन ध्रुवद्रव्य है और दूसरे का प्रयोजन वर्तमान पर्याय है।

जैसे दो मनुष्य आवें, उनमें एक कहे कि चावल लेने आया हूँ और दूसरा कहे कि खाली वारदाना लेने आया हूँ। उसीप्रकार यहाँ द्रव्यार्थिकनय कहता है कि मैं तो अखण्ड ध्रुवद्रव्य को देखने आया हूँ और पर्यायार्थिकनय कहता है कि मैं तो पर्याय को देखने आया हूँ। दोनों नयों को जानने वाला ज्ञान त्रिकाल पर जोर देकर उसका आदर करता है। पर्याय को जानता तो है; किन्तु उसके आश्रय से कल्याण नहीं मानता। यहाँ पर्यायार्थिकनय के विषयरूप में मात्र विकारी व्यंजन पर्यायों को ही लिया गया है।

इन दोनों नयों से वस्तु को जानना चाहिए। जो ज्ञान आत्मा की आकृति न माने अथवा त्रिकाली ध्रुवतत्त्व को न माने, वह ज्ञान मिथ्या है। त्रिकाली ध्रुव और उसकी वर्तमान पर्याय ह्न इन दोनों को जानने वाला ज्ञान ही प्रमाण है। एकान्तरूप नय का अवलम्बन कराने वाला उपदेश मिथ्या है, अत: वह ग्रहणीय नहीं है। दोनों नयों का उपदेश ग्रहण करने योग्य है। आत्मा त्रिकाल शुद्ध है और पर्याय में विकार भी है। सिद्ध जीवों के भी पहले संसारदशा में विकारी पर्याय थी ह्न इस भाँति दोनों नयों को जानना चाहिए।

''सत्ताग्राहक (द्रव्य की सत्ता को ही ग्रहण करने वाला) शुद्ध द्रव्यार्थिकनय के बल से पूर्वोक्त व्यंजन पर्यायों से मुक्त तथा अमुक्त (सिद्ध तथा संसारी) समस्त जीवराशि सर्वथा व्यतरिक्त ही है।'' शुद्ध द्रव्य की सत्ता को ही ग्रहण करनेवाले शुद्ध द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा तो सिद्ध या संसारी समस्त जीव विकारी व्यंजन पर्यायों से रहित ही हैं।

आत्मा के प्रदेशत्व गुण की जिस पर्याय में कर्म का निमित्त है, उसको विभाव व्यंजन पर्याय कहते हैं। वह पर्याय संसार दशा में पर्यायदृष्टि से है; किन्तु शुद्ध द्रव्यार्थिकदृष्टि से तो किसी भी जीव के वह पर्याय नहीं है।

पर्याय के दो भेद हैं ह्न अर्थपर्याय और व्यंजनपर्याय। इनके भी दो-दो प्रकार हैं। स्वभाव अर्थपर्याय और विभाव अर्थपर्याय; स्वभाव व्यंजनपर्याय और विभाव व्यंजनपर्याय। प्रदेशत्वगुण की पर्याय को व्यंजनपर्याय कहते हैं, यहाँ विभाव व्यंजनपर्याय की बात है। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

रे जीव ! सुन, यह तेरे दुःख की कथा

कबहूँ आप भयो बलहीन सबलनि करि खायो अति दीन।
छेदन-भेदन-भूख-पियास भारवहन-हिम-आतप त्रास ।।७।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

पहले अध्याय में मनुष्य-देव सहित चारों गतियों के दुःख दिखाकर फिर दूसरे अध्याय में कहेंगे कि ह्न

'ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञान-चरणवश, भ्रमत भरत दुःख जन्म-मरण।'

चार गति के ऐसे घोर दुःख मिथ्यादर्शन-मिथ्याज्ञान-मिथ्याचारित्र के कारण से ही जीव भोगता है; अतः यथार्थ वीतराग-विज्ञान के द्वारा उस मिथ्यात्वादि को छोड़ना चाहिए। निजस्वरूप की पहचान न करने से जीव बहुत दुःखी हुआ; अतएव निजस्वरूप की पहचान कर ! यही दुःख से छूटने का उपाय है। स्वरूप की नासमझी से अनन्त दुःख और स्वरूप की सच्ची समझ से अनन्तसुख होता है।

निजस्वरूप का अनुभव नहीं करनेवाला जीव चारों गति में दुःखी ही है, उसे कहीं तनिक भी सुख नहीं है। अज्ञान में सुख कहाँ से हो ? दुःखों का यह कथन जीव को डराने के लिए नहीं किया गया; अपितु वास्तव में जो दुःख जीव भोग रहा है, वह दिखाया है। जीव को यदि ऐसे दुःखों का सचमुच में भय हो तो उनके कारणरूप मिथ्यात्वभाव को छोड़े और सुख के उपायरूप सम्यक्त्वादि का उद्यम करे।

शरीर का छेदन होने पर जीव दुःखी होता है कि हाय रे, मैं छेदा गया। पर वास्तव में शरीर का छेदन होना कोई दुःख नहीं है। वास्तव में अज्ञानी को देह में ही अपना सर्वस्व दिखता है, देह से अलग अपना कोई अस्तित्व ही उसे नहीं दिखता, इसकारण देहबुद्धि से वह दुःखी है।

छिद जाय या ले जाय कोई अथवा प्रलय को प्राप्त हो ।
जावे चला चाहे जहाँ पर परिग्रह मेरा नहीं ।।२०९।।

ज्ञानी जानता है कि शरीर का छेदन-भेदन होने पर मेरा तो छेदन-भेदन नहीं होता, मैं तो अखण्ड ज्ञान हूँ; ह्न जिसने ऐसा भान नहीं किया और देह में ही आत्मबुद्धि करके मूर्च्छित हो रहा है, वह जीव छेदन-भेदन के प्रसंग में दुःखी होता है। वह दुःख देह के छेदन का नहीं; अपितु उसके प्रति ममत्व परिणाम का है।

तिर्यंच अवस्था में जीव ने अनन्त दुःख भोगा। खरगोश-हिरन जैसे निर्बल प्राणी बेचारे जंगल में घास खाकर जीनेवाले, उन्हें सिंह-बाघ आदि खा जायें, तब वे कुछ न कर सके और दुःखी होकर प्राण गवाँ दें। हाथी जैसे बड़े प्राणी को भी सिंह फाड़कर खा जाता है और सिंह-बाघ को भी शिकारी लोग बन्दूक से मार देते हैं, इसप्रकार मरता हुआ जीव दुःखी होता है; क्योंकि उसे देह की ममता नहीं छूटी। ममता से ही दुःख है और ममता का मूल है अज्ञान।

यहाँ पर दूसरा खा जाये, छेद डाले इत्यादि संयोग के द्वारा कथन करके सामनेवाले जीव का क्रूर हिंसकभाव और इस जीव का दुःख दिखाना है। बाकी अरूपी आत्मा तो न किसी से खाया जाता है, न छेदा जाता है और न मरता है; ऐसे अपने आत्मा को न पहचानकर इसने अज्ञान से अपने को देहरूप ही माना है। अतएव देह का छेदन-भेदन होने पर मैं ही मर गया ह्न ऐसा समझता हुआ अज्ञानी प्राणी महादुःखी होता है।

प्रश्न :ह्न तो क्या ज्ञानी को देह के छेदन-भेदन होने से दुःख नहीं होता होगा?

उत्तर :ह्न ना; अज्ञानी को देहबुद्धि से जैसा दुःख होता है, वैसा ज्ञानी को कदापि नहीं होता; अनन्त दुःख के कारणरूप मिथ्यात्व को तो उसने छेद डाला है। अतः किसी भी हालत में मिथ्यात्वजन्य अनन्तदुःख तो उसे होता ही नहीं। मिथ्यात्व के अभाव में बाकी के राग-द्वेष से जो दुःख है, वह तो बहुत अल्प है। अज्ञानी कदाचित् आराम से बैठा हो, शरीर में कोई छेदन-भेदन न हो, फिर भी मिथ्यात्वभाव के कारण उस वक्त भी वह अनन्तदुःख को वेद रहा है। ऐसा कोई नियम नहीं है कि बाह्य में संयोग प्रतिकूल हो, तभी जीव को दुःख हो। प्रतिकूल संयोग का कथन तो स्थूल बुद्धिवाले जीवों को समझाने के लिए है। **(शेष पृष्ठ - 29 पर)**

संक्षिप्त समाचार

*** मुख्यमंत्री को अवॉर्ड ह्न** राजस्थान की **मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे** को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय द्वारा **वीमेन टुगैदर अवॉर्ड** से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें कोटा डोरिया एवं खादी को प्रोत्साहन देने, कातिनों एवं बुनकरों के शिल्प को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहिचान दिलाने एवं महिमा सशक्तिकरण के लिये दिया गया। ज्ञातव्य है कि आप देश की पहली मुख्यमंत्री हैं, जिन्हें यह अवॉर्ड प्राप्त हुआ है।

*** दिल्ली में उतरा अजूबा ह्न** 6 मई को दुनिया का सबसे बड़ा यात्री विमान ए-380 भारत में पहली बार इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। यह विमान 80 फुट ऊँचा, 73 मीटर लम्बा एवं 277000 किलो वजन वाला है। इसकी यात्री क्षमता 850 एवं वजन क्षमता 5.40 लाख किलो है।

*** सिद्धायतन में मुख्यमंत्री चौहान ह्न** सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में स्थापित तीर्थधाम सिद्धायतन में जनदर्शन कार्यक्रम के दौरान 8 अप्रैल को म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान को श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट ने अभिनन्दित किया।

*** टीम इंडिया की फतह ह्न** बांग्लादेश को 2-0 से हराकर भारत ने वन-डे शृंखला पर फतह हासिल की। महेन्द्र सिंह धोनी को मैन ऑफ द सीरीज से नवाजा गया।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री गजेन्द्र जैन बड़ामलहरा एवं श्री रामनरेश (नीरज) जैन खड़ैरी ने यू.जी.सी. नई दिल्ली द्वारा लेक्चररशिप के लिये आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में जैन दर्शन विषय से सफलता अर्जित की; एतदर्थ महाविद्यालय परिवार हार्दिक बधाई देते हुए आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आदर्श विद्यार्थी पुरस्कार

पण्डित टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के वर्ष २००६-०७ के सत्र में शास्त्री अंतिम वर्ष के छात्र प्रशांत उकलकर गोवर्धन एवं रोहन रोटे कोल्हापुर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा शील्ड प्रदान कर आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार महाविद्यालय की गतिविधियों में उपस्थिति, अवकाश के दौरान तत्त्वप्रचार, सांस्कृतिक व खेल प्रतियोगिताओं में सहभाग, आचरण आदि बिंदुओं के आधार पर प्रदान किया जाता है।

मुमुक्षु एवं विद्वत् सम्मेलन सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 7 मई, 2007 तक मुमुक्षु एवं विद्वत्सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में सम्पूर्ण देश के अनेक मुमुक्षु मण्डलों के प्रतिनिधि एवं मुमुक्षु भाईयों ने भाग लिया। महाविद्यालय के स्नातकों की उपस्थिति इस सम्मेलन की विशेषता रही।

सम्मेलन का उद्घाटन श्री अनन्तभाई अमोलखचन्द शेठ मुम्बई द्वारा किया गया।

प्रथम सत्र में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने सम्मेलन के प्रमुख विषय 'वर्तमान में युवा पीढ़ी में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण कैसे हो ?' की आवश्यकता का उल्लेख करते हुये अपना मंतव्य प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् विभिन्न वक्ताओं को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया। इस सत्र में पण्डित धन्यकुमारजी भौंरे कारंजा, पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित चन्दुभाई, पण्डित बाबूभाई मेहता, ब्र. सुमतप्रकाशजी आदि विद्वानों ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये।

द्वितीय सत्र में श्री हंसमुख बेचरदास मोदी मुम्बई, श्री सुरेन्द्रजी जैन उज्जैन, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, श्री सतीशजी मोदी मुम्बई, श्री विश्वलोचनजी जैनी नागपुर, श्री जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुरेशजी जैन गुना आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये।

तृतीय सत्र में प्रो. रतनचन्दजी होशंगाबाद, कु. जीनल शाह मुम्बई, पण्डित जिनचन्दजी शास्त्री कोल्हापुर, श्री प्रेमचन्दजी राघौगढ़, विदुषी राजकुमारी बेन जयपुर, विदुषी हंसाबेन जबेरी आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

चतुर्थ सत्र में पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री ज्ञानचन्दजी जैन गढाकोटा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, श्री मुकेशजी करेली, श्रीमती रेखाबेन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि ने अपने मार्मिक उद्बोधन दिये।

समापन सत्र को संबोधित करते हुये सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि चूँकि हर परिवार, समाज एवं क्षेत्र की परिस्थितियाँ अलग-अलग प्रकार की है; अत: इन सब वर्गों के युवाओं में धार्मिक संस्कारों हेतु उन-उन स्तरों पर कार्य किया जाना आवश्यक है; अत: धार्मिक संस्कारों के लिये सर्व प्रथम अपने से शुरुआत करनी चाहिये और फिर अपने आस-पास के परिकर को भी संस्कारित करने का प्रयास करना चाहिये। तभी सही रूप में प्रचार-प्रसार संभव है।

सम्मेलन के सभी सत्रों का संचालन देवलाली ट्रस्ट के अध्यक्ष व ट्रस्टी श्री मुकुन्दभाई खारा एवं श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई ने किया।

छपकर तैयार

बालकों में आध्यात्मिक संस्कारों का बीजारोपण करने के उद्देश्य से विगत कुछ वर्षों से डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अन्तर्गत जैन नर्सरी, जैन जी.के. आदि पुस्तकों के प्रकाशन के पश्चात् अब चित्रकला से संबंधित **जैन कलर बुक भाग-1** एवं **जैन कलर बुक भाग-2** पुस्तक का प्रकाशन हो चुका है। पुस्तक का प्रत्येकी मूल्य-25/-रुपये है। **प्राप्ति स्थान - (1)** दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट, गुरुकुल टावर, ए-1/04 जे.एस. रोड, दहीसर (प.) मुम्बई, फोन-09221225264

(2) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

धर्म प्रभावना

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा किये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की श्रृंखला में दिनांक ८ से १२ अप्रैल ०७ तक **छिन्दवाड़ा** में **मोक्षमार्ग की पूर्णता** विषय पर विभिन्न कक्षायें एवं प्रवचन हुए। इस नवीन विषय को समाज ने विशेष जिज्ञासा से सुना और ब्र. यशपालजी को पुन: छिन्दवाड़ा पधारने का आमंत्रण भी दिया। ज्ञातव्य है कि आपकी दोपहर में ब्र. केशरीचन्दजी 'धवल' के साथ तत्त्वचर्चा भी होती थी।

दिनांक १३ अप्रैल,०७ को **नागपुर** के वीतराग-विज्ञान भवन में प्रात: मोक्षमार्ग की पूर्णता एवं रात्रि में करणानुयोग पर आपके प्रवचन हुए। प्रवचनोपरान्त करणानुयोग संबंधी शंका-समाधान किया गया। इसके अतिरिक्त मुमुक्ष मण्डल के साथ भविष्य में होने वाले कार्यों की योजनाओं के संबंध में विशेष चर्चा हुई।

ज्ञातव्य है कि दिनांक २२ अप्रैल को **डोंबीवली** में आपका समयसार गाथा-५ पर विशेष प्रवचन हुआ, जिसमें श्रोताओं की अच्छी संख्या रही।

अमायन में विद्यार्थी गृह का शुभारम्भ 19 जून से..

आदरणीय बाल ब्र. रवीन्द्रकुमारजी के सान्निध्य में अमायन (म.प्र.) में श्री वर्द्धमान दि. जैन विद्यार्थी गृह का शुभारंभ दिनांक 19 जून, 07 को श्रुतपंचमी के दिन से किया जा रहा है।

इस संस्थान का उद्देश्य बालकों में लौकिक अध्ययन के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं सदाचार के गहरे संस्कार डालना है।

उक्त संस्थान में कक्षा 9 से प्रवेश दिया जायेगा; एतदर्थ जो छात्र प्रवेश लेने के इच्छुक हों वे दिनांक 5 जून से 7 जून तक आयोजित होनेवाले शिविर में सम्मिलित होवें। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें ह्न अखिल जैन, श्री वर्द्धमान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह,पो.अमायन, जिला- भिण्ड (म.प्र.) मो.9826225580, 9926485686, 07539-287334

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा पाठ्यक्रम

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा (राज.) ने जुलाई 07 से पत्राचार द्वारा प्राकृत भाषा प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम एवं अपभ्रंश भाषा प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम चलाने का निर्णय लिया है।

राजस्थान व राजस्थान के बाहर के अध्ययनार्थियों के लिये यह परीक्षा राजस्थान के छह केन्द्रों ह्न जयपुर, जोधपुर, कोटा, अजमेर, उदयपुर व बीकानेर में ही सम्पन्न होगी।

विश्वविद्यालय की विज्ञप्ति जारी होने पर आवेदन-पत्र निम्नलिखित सभी अध्ययन केन्द्रों पर 40/- रुपये में प्राप्त किये जा सकेंगे तथा 70/-रुपये का डी.डी. वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय अजमेर/ बीकानेर/ जोधपुर/ कोटा/ जयपुर/ उदयपुर के नाम भेजकर क्षेत्रिय केन्द्र से मंगाये जा सकेंगे।

अधिक जानकारी के लिये निम्नांकित फोन नं. पर सम्पर्क करें ह्न

अजमेर - 0145-2622855	बीकानेर - 0151-2110036
जयपुर - 0141-2709425	जोधपुर - 0291-2730655
कोटा - 0744-2472507	उदयपुर - 0294-2417149

ह्न डॉ. कमलचन्द सोगाणी

(पृष्ठ-25 का शेष...)

साधारण लोगों को बाहर के छेदन-भेदन आदि का दु:ख भासता है; परन्तु अनन्त दु:ख का मूल कारण मिथ्याभाव है, उस मिथ्याभाव का अनन्तदु:ख उनके लक्ष्य में नहीं आता। यहाँ चार गति के दु:खों के वर्णन के बाद तुरन्त ही दूसरी ढाल के प्रारम्भ में कहेंगे कि ये सभी दु:ख मिथ्यात्व के निमित्त से ही जीव भोगता है; अत: उस मिथ्यात्व का सेवन छोड़कर सम्यक्त्वादि में आत्मा को लगाना चाहिए।

जिसको मिथ्यात्वादि भाव नहीं, उसे प्रतिकूलता में भी दु:ख नहीं। देखो, ये सुकौशल आदि वीतरागी मुनिराज आत्मा के आनन्द में कैसे मशगूल हैं ! बाह्य में तो शरीर को बाघ खा रहा है, किसी का शरीर अग्नि से जल रहा है; किन्तु अन्तर में आत्मा उपशमरस में ऐसा तरबतर हो रहा है कि उनको जरा भी दु:ख नहीं होता; क्योंकि दु:ख के कारणरूप मिथ्यात्वादि का अभाव है। शरीर भले ही जलता हो; पर मोहाग्नि का अभाव होने से आत्मा को कोई जलन नहीं है, आत्मा तो अपने चैतन्य के शांतरस में निमग्न है; अत: वह तो निजानंद की मौज कर रहा है। यह सिद्धान्त है कि दु:ख का कारण मोह है, संयोग नहीं; वैसे ही सुख का कारण वीतराग-विज्ञान है, संयोग नहीं। ●

वर्ष २००७ को पाठशाला वर्ष मनाने का निर्णय

आज के बालक कल के समाज का भविष्य हैं। यदि बालकों में सत्संस्कार, धार्मिक आस्थायें रहेंगी तो ही यह समाज गतिशील बना रह सकेगा। हमारी नई पीढ़ी में धार्मिक संस्कार बने रहें, इस बात को ध्यान में रखते हुए भारतवर्षीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति जयपुर ने वर्ष २००७ को राष्ट्रीय स्तर पर **पाठशाला वर्ष** मनाने का निर्णय किया है।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर पाठशाला समिति गाँव-गाँव, शहर-शहर में धार्मिक पाठशाला की स्थापना के माध्यम से बच्चों में धार्मिक संस्कारों की अभिवृद्धि का प्रयत्न कर रही है एवं समाज के सहयोग से पुरानी पाठशालाओं को अधिक सक्रिय व क्रमोन्नत करने का बीड़ा उठाया है।

इस सबका सबसे बड़ा लाभ यह है कि समाज और अधिक सक्रिय तथा उत्साहित होगी एवं भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित मूल तत्त्वज्ञान की आराधना का मार्ग प्रशस्त होगा। तत्त्वज्ञान के संरक्षण-संवर्धन तथा इसके प्रचार-प्रसार के कार्यों में गति आयेगी। केन्द्र से स्थानीय पाठशाला/समाज का संवाद भी स्थापित होगा।

समाज का दायित्व ह्न आपसे अनुरोध है कि इस अवसर पर पाठशाला के बालकों के कार्यक्रम रखें, ताकि समाज को पाठशाला का परिचय प्राप्त हो और उसका महत्व ख्याल में आवे। कोई एक दिन पाठशाला की मीटिंग रखकर समाज के समक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत करें, जिससे पाठशाला सुचारु संचालन में समाज का सहयोग लिया जा सके। पाठशाला अध्यापक का सम्मान करें। बालकों का परीक्षा फल घोषित कर उनको प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार समाज के सहयोग से वितरित करावें।

आशा है कि आप गंभीरता से इस विषय पर विचार कर सार्थक कार्यवाही करावेंगे। आपके इन प्रयासों से पाठशाला और अच्छी तरह संचालित हो सकेगी। यदि पाठशाला के संचालन में कोई परेशानी या समस्या आ रही हो तो कृपया हमें बतायें, हम उन्हें हल करने का पूरा प्रयत्न करेंगे।

इस अवसर पर निम्न मापदण्डों के अनुसार पुरस्कारों की घोषणायें की गई : ह्न

1. **श्रेष्ठ पाठशाला एवं श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार ह्न** जिन पाठशालाओं का ग्रीष्मकाल (अगस्त ०७) या शीतकाल (जनवरी ०८) की परीक्षा का परिणाम शत प्रतिशत रहेगा एवं ७५ प्रतिशत छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होंगे, उन सभी पाठशालाओं को श्रेष्ठ पाठशाला एवं सभी अध्यापकों को श्रेष्ठ अध्यापक माना जायेगा।

2-3. **सर्वाधिक छात्र संख्या एवं सर्वाधिक विषय पुरस्कार ह्न** जिस पाठशाला में सर्वाधिक छात्र परीक्षा (सभी विषयों को मिलाकर) देंगे, उस पाठशाला को सर्वाधिक छात्र संख्या पुरस्कार एवं जिस पाठशाला से सर्वाधिक विषयों की परीक्षा दिलायेंगे, उन्हें सर्वाधिक विषय पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

4. **वर्ष की सर्व श्रेष्ठ पाठशाला ह्न** पाठशाला समिति के नियमों के आधार पर वर्ष की श्रेष्ठ पाठशाला का चयन किया जायेगा। इसमें पाठशाला का रिकार्ड, सेट अप, परीक्षा, अध्यापक की योग्यता इत्यादि को ध्यान में रखा जायेगा। इसके अन्तर्गत चयनित पाठशाला को ११ हजार रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा; एतदर्थ **प्रविष्टियाँ आमंत्रित** हैं।

❐ उपरोक्त पुरस्कारों की घोषणा प्रशिक्षण शिविर २००८ के अवसर पर की जायेगी एवं पुरस्कार संख्या १-३ के अन्तर्गत प्रशस्ति पत्र एवं मेमेन्टों से अक्टूबर ०८ जयपुर-शिविर के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा। इसके अलावा पुरस्कृत सभी पाठशालाओं एवं अध्यापकों के सचित्र विवरण जैनपथ प्रदर्शक में छापे जायेंगे।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया सम्मानित

देवलाली : यहाँ दिनांक 6 मई को मुमुक्षु सम्मेलन के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद द्वारा बाल साहित्य के लेखन हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया को **पण्डित टोडरमल स्मृति पुरस्कार** के अन्तर्गत शॉल, श्री फल, प्रशस्ति-पत्र, मेमेन्टो एवं पाँच हजार रुपये की नकद राशि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आपको पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा भी पाँच-पाँच हजार रुपये की राशि समर्पित की गई। **– डॉ. सत्यप्रकाश जैन,** मंत्री-विद्वत्परिषद

वैराग्य समाचार

१. इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्रीमती तारादेवी पाड़लिया ध.प. श्री कन्हैयालाल पाड़लिया की प्रथम पुण्य स्मृति में जिनवाणी प्रचार-प्रसार हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 5 हजार रुपये प्राप्त हुये।

2. वडवाण (गुज.) निवासी श्री चिमनलाल संघवी का 84 वर्ष की आयु में जनवरी-07 में देहावसान हो गया। आप 20 वर्षों तक गुरुदेवश्री के सान्निध्य में रहे तथा बाद का जीवन आपने सोनगढ़ में ही व्यतीत किया। गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती के शुभ अवसर पर आपकी स्मृति में आपके भ्राता श्री मंगलदासजी संघवी की ओर से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 10 हजार रुपये प्रदान किये गये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति की प्राप्ति करें ह्न यही मंगल भावना है।

गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती धूम-धाम से मनाई

वर्तमान युग में आध्यात्मिक क्रांति के सूत्रधार युगपुरुष श्री कानजीस्वामी की 118 वीं जन्मजयन्ती अनेक स्थानों पर उल्लासपूर्वक मनाई गई। संक्षिप्त समाचार निम्नानुसार हैं ह्न

1. **देवलाली :** यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्रीमती कोकिलाबेन हिम्मतलाल शाह परिवार द्वारा दिनांक 15 से 19 अप्रैल, 2007 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर एवं 47 शक्ति विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन गुरुदेवश्री के टेप प्रवचन के पश्चात् तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं ब्र. हेमचन्दजी के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही व्याख्यान माला में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री के प्रवचन हुये तथा प्रतिदिन डॉ. उज्ज्वला बेन शहा ने कक्षा ली ।

दिनांक 19 अप्रैल को जन्म जयन्ती के अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, ब्र. हेमचन्दजी, पण्डित दिनेशभाई शहा, पण्डित राजमलजी पवैया, श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई ने गुरुदेवश्री के प्रति गुणानुवाद व्यक्त किया।

सभा का संचालन श्री मुकुन्दभाई खारा ने तथा संयोजन श्री वीनूभाई मुम्बई ने किया।

2. **जयपुर :** यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय द्वारा दिनांक 19 अप्रैल को गुरुदेवश्री के जीवन पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। संचालन पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने किया। गोष्ठी में श्री जुगराजजी कासलीवाल, श्री एम.पी. जैन, श्री दिलीप भाई शाह, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, कु.मुक्ति जैन व प्रसन्न शेटे ने गुरुदेव के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये।

उपाध्याय कनिष्ठ के छात्र सुदीप जैन व जयेश जैन ने काव्य द्वारा अपने हृदयोद्गार व कु. किंजल जैन राजकोट ने बाल कृतज्ञता व्यक्त की। मंगलाचरण एकत्व जैन ने किया।

3. **खनियाँधाना (म.प्र.) :** यहाँ श्री नेमिनाथ दि. जैन नया मन्दिर में इस अवसर पर ब्र. नीलम दीदी के निर्देशन में प्रात: गुरुदेव श्री के जीवन प्रसंग पर महिला वर्ग की गोष्ठी का आयोजन किया गया। रात्रि में आयोजित गोष्ठी में विभिन्न विद्वानों ने गुरुदेव श्री द्वारा किये गये उपकार एवं उनके संबंध में फैली मिथ्या भ्रान्तियों पर प्रकाश डाला । तत्पश्चात् श्री महावीर वीतराग विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा 'कानू की करुणा' एकांकी प्रस्तुत की गई। एकांकी का सफल संचालन एवं निर्देशन कु. दीप्ति मोदी ने किया। **ह्न संजय जैन**

अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ न्यास का गठन

जयपुर : श्री महावीरजी में सम्पन्न जैन पत्र सम्पादक सम्मेलन के निर्णयानुसार 'अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ' के संस्थापक श्री अखिल बंसल ने उक्त नाम से न्यास का गठन कर उसका विधिवत रजिस्ट्रेशन करवा लिया है। न्यास में ५ स्थायी तथा १० अस्थायी ट्रस्टी रखे गये हैं, जिनका कार्यकाल रोटेक्ट प्रणाली के अनुसार तीन वर्ष का रहेगा। 'जैन पत्र सम्पादक संघ' इस न्यास के अन्तर्गत ही कार्य करेगा। आजीवन सदस्यों में से ही १० ट्रस्टियों का चयन किया जायेगा।

अखिल भा.जैन पत्र सम्पादक संघ की तदर्थ समिति का गठन १ वर्ष के लिए निम्न प्रकार किया गया ह्न श्री कपूरचन्द पाटनी (जैन गजट) गोहाटी ह्न **अध्यक्ष**; श्री नरेन्द्रकुमार जैन (स्वतंत्र जैन चिन्तन) अजमेर ह्न **कार्याध्यक्ष**; डॉ. शेखरचन्द जैन (तीर्थंकर वाणी) अहमदाबाद ह्न **उपाध्यक्ष**; श्री अखिल बंसल (समन्वय वाणी) जयपुर ह्न **महामंत्री**; डॉ. अनुपम जैन (अर्हत् वचन) इन्दौर ह्न **मंत्री**; डॉ. महेन्द्र 'मनुज' (श्री जैन हलचल) इन्दौर ह्न **संयुक्त मंत्री**; डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन (पार्श्व ज्योति) बुरहानपुर ह्न **संगठन मंत्री**; श्री नवनीत जैन (सम्मेदाचल) मेरठ ह्न **प्रचार मंत्री**; डॉ. संजीव भानावत जयपुर ह्न **प्रवक्ता**; डॉ. रमेशचन्द जैन निवाई ह्न **कोषाध्यक्ष** तथा श्री अनूपचन्द एडवोकेट फिरोजाबाद को **कानूनी सलाहकार** नियुक्त किया गया है। ३१ सदस्यी कार्यकारिणी की घोषणा शीघ्र की जायेगी। **ह्न अखिल बंसल**

आगामी शिविर...

1. **देवलाली** में 31 मई से 4 जून तक लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका शिविर का आयोजन।
2. **हिंगोली** में 28 मई से 3 जून, 07 तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन।
3. **भिण्ड (म.प्र.) :** दिनांक 28 मई से 7 जून, 07 तक ग्वालियर, चम्बल संभाग एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न 61 स्थानों पर ग्रुप शिविर।
4. **नागपुर :** अमरावती, वर्धा, अकोला आदि जिलों के लगभग 30 स्थानों पर दिनांक 2 जून से 10 जून तक ग्रुप शिविर का आयोजन।
5. **स्तवनिधी (कर्ना.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में दिनांक 4 जून से 14 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन।
6. **ईसरी (गिरिडीह-झा.ख.)** स्थित उदासीन आश्रम में आषाढ माह की अष्टान्हिका में विशिष्ट विद्वानों के सहयोग से विशेष आयोजन। **सम्पर्क ह्न सम्पतलाल छाबड़ा**
मो. 09830647854, 06558-233158

उपकार दिवस सानन्द सम्पन्न

दिल्ली : श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र पर आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की जन्म जयन्ती उपकार दिवस के रूप में मनाई गई, जिसके अन्तर्गत दिनांक 8 से 15 अप्रैल तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, बाल ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचनों का लाभ मिला।

व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ. सुदीपजी जैन, डॉ. वीरसागरजी जैन, डॉ. अनेकान्तजी जैन, डॉ. अशोकजी गोयल, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं श्री कान्तिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

दिनांक 8 अप्रैल को शिविर का उद्घाटन श्री मेलारामजी जैन एवं अध्यक्षता श्री अशोकजी जैन दिल्ली ने की तथा गुरुदेव जयन्ती के अवसर पर 15 अप्रैल को ध्वजारोहण श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़ ने किया। शिविर के आमंत्रकर्त्ता श्री मंगलसेन जैन परिवार विश्वासनगर दिल्ली थे।

अब 5 अगस्त से 14 अगस्त, 07 तक

कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट द्वारा श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में आयोजित होनेवाला 30 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर अब **5 अगस्त से 14 अगस्त** 2007 तक आयोजित किया जायेगा।

सभी को शिविर में जयपुर पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

31 मई से 06 जून, 07	लंदन		धर्मप्रचारार्थ
07 जून से 22 जुलाई, 07	अमेरिका		धर्मप्रचारार्थ
05 से 14 अगस्त,07	जयपुर		शिक्षण-शिविर
08 से 15 सितम्बर, 07	मुम्बई	(भारतीय विद्याभवन)	श्वेताम्बर पर्यूषण
16 से 26 सितम्बर, 07	मुम्बई		दशलक्षण महापर्व
17 से 26 अक्टूबर, 07	जयपुर		शिक्षण शिविर